डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B. A. - PART-I
M. I. L.
HINDI

Date :- 06-02-2023

Ajanta

Page No.
Date

फूल और काँटा

है जन्म लेते जगह में एक ही,
एक ही पौधा उन्हें है पालता
रात में उन पर चमकता चाँद भी,
एक ही सी चाँदनी है डालता।

मेह उन पर है बरसाता एक सा,
एक सी उन पर हवाएँ हैं बही
पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
ढंग उनके एक से होते नहीं।

छेदकर काँटा किसी की उँगलियाँ,
फाड़ देता है किसी का वरवसन
प्यार-डूबी तितलियों का पर कतर,
भँवर का है भेद देता श्याम तन।

फूल लेकर तितलियों को गोद में
भँवर को अपना अनूठा रस पिला,
निज सुगन्धों और निराले ढंग से
है सदा देता कली का जी खिला।

है खटकता एक सबकी आँख में
दूसरा है सोहता सुर शीश पर,
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

Page No.
Date

संदर्भ-प्रसंग :-

'फूल और काँटा' अयोध्या सिंह 'उपाध्याय' जी द्वारा रचित कविता है। इस कविता में कवि ने फूल और काँटे के माध्यम से जीवन के सत्य को उद्घाटित किया है। मनुष्य के नैतिक गुण और अच्छे कर्म ही महानता के शिखर पर ले जाता है। इसमें उसका जन्म या कुल का कोई हाथ नहीं होता।

व्याख्या :-

प्रस्तुत कविता 'फूल और काँटा' कवि ने फूल और काँटा की तुलना उनके विभिन्न प्राकृतिक (स्वाभाविक) गुणों के आधार पर की है। एक ही पौधा में इन दोनों का जन्म एक ही स्थान पर होता है। पर इनके व्यवहारिक गुणों में बहुत अन्तर है। इन दोनों का भरण-पोषण एक ही अवस्था में होता है। रात में चमकने वाला चाँद इन दोनों पर एक समान रोशनी बिखेरता है। बरसात के समय पानी की बूंदे इन दानों पर एक ही समान पड़ती है। हवा का व्यवहार इन दोनों के प्रति एक जैसी है। पर इनके गुणों में जमीन आसमान का फर्क है। काँटे उंगलियों में चुभते हैं। ये किसी के बहुमूल्य वस्त्र की कीमत की परवाह न करते हुए उन्हें भी फाड़ देते हैं। प्यारे-प्यारे मनोहर तितलियों के पंख को फाड़ देते हैं। ये काले भँवरों को

भी नहीं छोड़ते, जो पराग (रस) पान के उद्देश्य से फूल पर मंडराते हैं, पर काँटे उन्हें भी घायल कर देते हैं। इन सभी अवगुणों के विपरीत अवस्था में मौजूद फूल का स्वभाव बहुत ही अच्छा एवं सराहनीय है। फूल तितलियों को अपनी गोद में बिठाते हैं तथा भौंरों को अपना पराग (रस) पान कराते हैं। अपने आकर्षक रंगों से यह सदैव दूसरों को प्रभावित एवं आकर्षित करते रहते हैं। यह आदर्श एवं सुख प्रदायक के प्रतीक गुण सम्पन्न है। ये सर्वप्रिय तथा देवताओं के शीश पर नैवेद्य पूजा के रूप में चढ़ाए जाते हैं। ये हमारी सद्भावना एवं निष्ठा के प्रतीक है।

विशेष :-

मनुष्य की महत्ता एवं उसकी सच्ची पहचान उसके सद्गुणों एवं व्यवहार से होती है न कि ऊँचे कुल में जन्म लेकर घृणित कार्य करने से। आदर्श जीवन व्यतीत करने के उद्देश्य से मनुष्य को फूल के स्वभाविक गुणों को अपनाना श्रेयस्कर होगा। कविता का भाव शिक्षाप्रद है एवं इसकी भाषा सरल, सहज और प्रवाह युक्त भी। कविता तुलनात्मक शैली में लिखी गई है। 'वर वसन' और 'चमकता चाँद' में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग मिलता है।